जिश्नू की चतुराई

मीनाक्षी भारद्वाज

चित्राँकनः सुजाता सिंह

यह किताब

....

की है

इस किताब के प्रकाशन में सहायता के लिए कथा

कॉगनिज़ेंट फाउण्डेशन,

चेन्नई की आभारी है।

v/;kid@v/;kfidkvk ds fy,

cMs mnns'; Ük[kyk – इस श्रृंखला की पुस्तकों में कहानियों द्‌वारा बच्चों को अपने वातावरण, जीवन और भविष्य के प्रति सजग एवं सक्रिय होने की प्रेरणा दी जा रही है।

vc Hkjks mMku! & vkxs i<us dk ikRlkgu

ft'uw dh prjkbZ – एक हँसती–खिलखिलाती कहानी जो अपने वातावरण को साफ रखने और आत्मनिर्भरता को सामने लाती है। विद्‌यार्थियों को स्वयं को कमज़ोर न समझने की प्रेरणा दें। जानवरों और उनके बच्चों के बारे में जानकारी इकट्‌ठी कराएँ।

जिश्नू की चतुराई

मीनाक्षी भारद्वाज

चित्रांँकनः सुजाता सिंह

कथा

जब भगवान पृथ्वी
पर आए, तब इमली के
पेड़वाले बस-स्टॉप पर
जिश्नू सरपंच खड़े थे।

“मैं जिश्नू को ढूँढ रहा हूँ” भगवान ने कहा।

पर जिश्नू की आँखें तो सड़क पर उड़ती हुई धूल पर लगी थीं। शायद उसे बस का इंतज़ार था।

“तुम मुझे रोज़ पुकारते हो ना? लो आज मैं आ गया हूँ,” भगवान बोले।

जिश्नू ने इधर-उधर देखकर पूछा “कौन हैं आप?”

“मैं भगवान हूँ!”

“भगवान,” जिश्नू कुछ सोच कर बोला, “मैं गाँववालों के लिए बहुत कुछ अच्छा करना चाहता हूँ। वे मुझसे कई चीज़ें माँगते हैं, जैसे कि एक साफ़ तालाब ...”

“मैं तुम्हारी मदद करूँगा,” भगवान बोले।

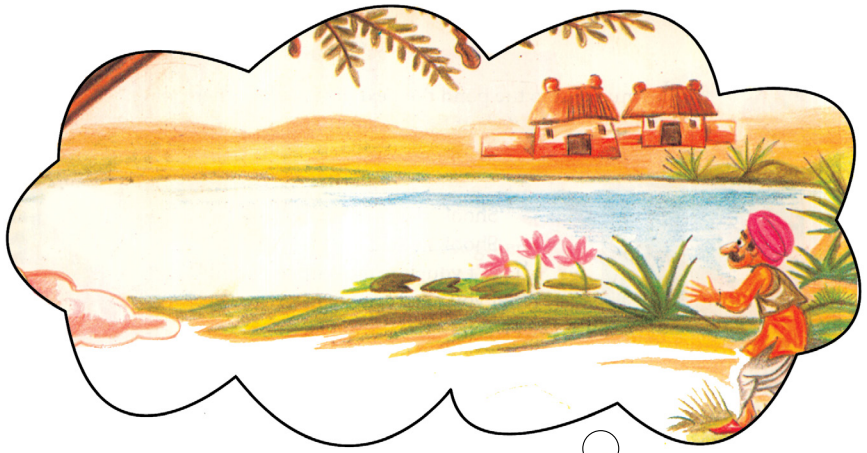

यह सुनकर जिश्नू गाँववालों के लिए एक साफ़ तालाब की कल्पना करने लगा।

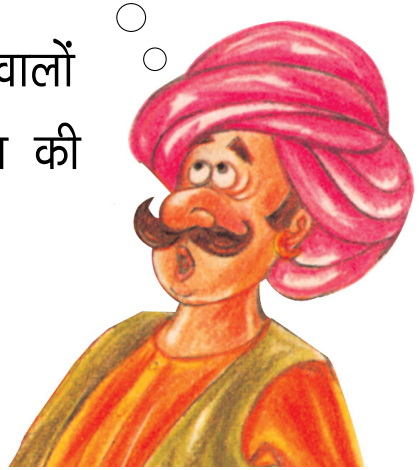

भगवान मुस्काए और बोले, “तुम भले आदमी हो। मैं तुम्हारी मदद अवश्य करूँगा। तुमको तो केवल लोगों से कहना है कि, उन्हें तालाब को साफ़ रखना चाहिए।”

“यह तो कोई मुश्किल काम नहीं है!” जिश्नू बोला, “आख़िर मैं सरपंच हूँ।”

अगले ही दिन जिश्नू पंचायत की बैठक में जा पहुँचा।

"मैं!" अपनी हीरे की अंगूठी दिखाते हुए वह बोला, "तालाब को साफ़ करना चाहता हूँ। अबसे कोई भी, हाँ, कोई भी, जिश्नूपुर के तालाब में कूड़ा नहीं फेंकेगा!"

"लो फिर आ गए अपनी सरपंचगिरी दिखाने!" लोगों ने कहा और ऐसे उठकर चले गए जैसे उन्होंने कुछ सुना ही न हो।

अगले दिन जब जिश्नू तालाब
पर गया, तब उसने देखा ...

एक नन्हा बछड़ा तालाब में
नहा रहा था!

"हट् ... हट्!
मेरा तालाब गन्दा मत करो।"

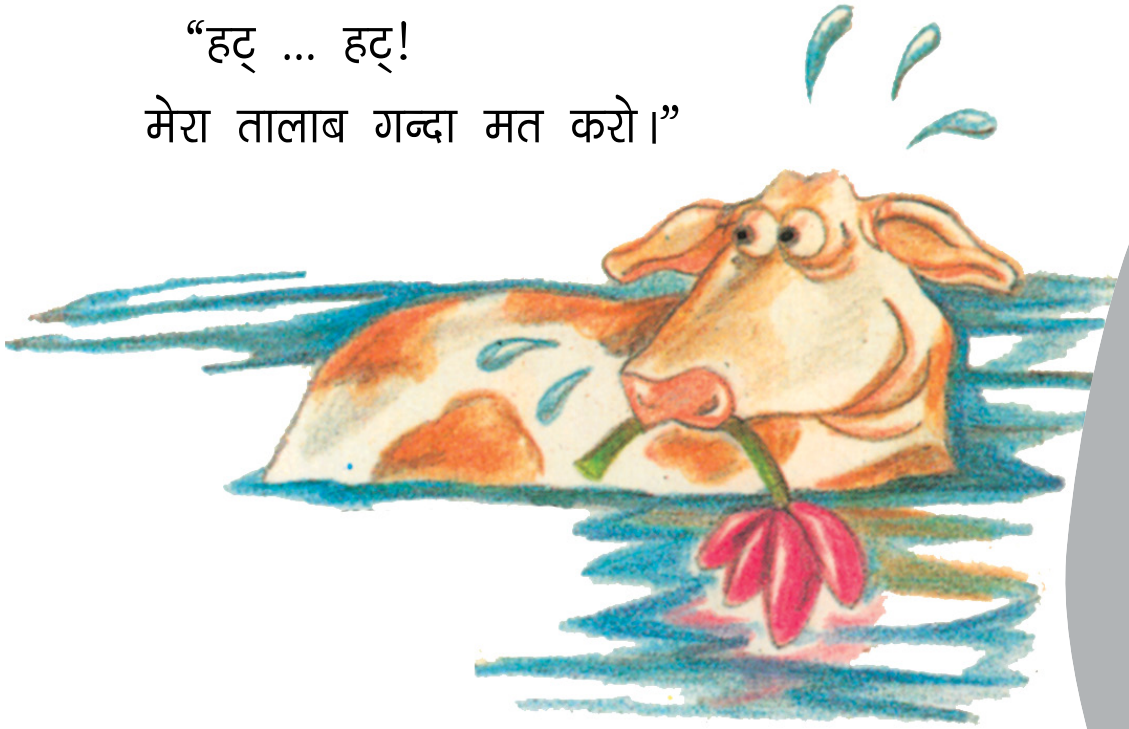

उसने बछड़े को भगाया।

"तुम्हें यहाँ एक नोटिस-बोर्ड की ज़रूरत है जिस पर लिखा हो, **तालाब गंदा न करें**" भगवान ने कहा।

जिश्नू घर गया और उसने एक बड़ा-सा नोटिस बोर्ड बनाया। पर अगले ही दिन एक बकरी उसका कागज़ चबा गई।

यही नहीं, उसने देखा तालाब के बीचोंबीच एक भैंस नहा रही थी।

जिश्नू ने फिर, भगवान के कहने पर, तालाब की रखवाली के लिए रामू किसान से बीस कुत्ते लिए।

उस रात जिश्नू चैन की नींद सोया।

पर अगली सुबह, रामू किसान और उसके बीस कुत्ते तालाब में तैरते दिखाई दिए। “हाय राम!” जिश्नू ने सिर पीट लिया, “मैं सोचता हूँ यहाँ एक दीवार होनी चाहिए!”

जिश्नू और पचास आदमियों ने मिलकर 250 दिनों में एक लम्बी दीवार बनाई।

"अब देखता हूँ कौन चढ़ता है इस पर," जिश्नू ने मूँछों पर ताव देते हुए कहा।

पर जिश्नू की नन्ही बेटी चम्पा को उस लोहे के गेट से सिमटकर, तालाब तक पहुँचने में केवल एक दिन ही लगा।

"हे भगवान! मेरी मदद करो!" जिश्नू गिड़गिड़ाया।

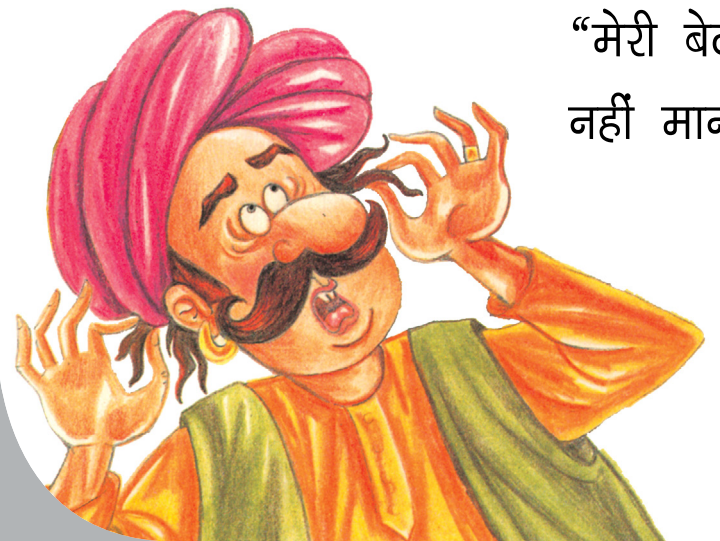

"मेरी बेटी ही मेरी बात नहीं मानती!"

फिर जिश्नू ने लगातार तीन दिन तक पूजा की। वह कमज़ोर हो गया, पर भगवान थे कहाँ?

"पूजा व्यर्थ है" उसने सोचा, "क्यों न हम अपने तालाब को खुद साफ़ रखें। तालाब स्वच्छ रखने के लिए हमें भगवान की क्या आवश्यकता है? मैं और मेरे गाँववाले इसे साफ़ कर सकते हैं। और साफ़ रख भी सकते हैं!"

यह सोच, जिश्नू तालाब की ओर भागा।

वहाँ पहुँचकर उसने देखा कि, गाँव के सारे बच्चे और सारे लोग वहाँ जमा थे ... सभी अपने-अपने जानवरों के साथ!

“आहा! पूरा गाँव यहीं है!” जिश्नू ज़ोर से बोला, “दोस्तों, इस तालाब को साफ़ करने में मैं तुम्हारी मदद ...” तभी उसने कुछ देखा। गाँववाले एक बोर्ड लगा रहे थे। जिश्नू जहाँ का तहाँ खड़ा रह गया ... मुँह खोले!

तभी गाँववालों की उस पर नज़र पड़ी।

“आज तुम्हारा जन्म-दिन है न? यह नन्ही-सी भेंट हमारी ओर से!”

“भ ... भेंट?” “अब हम सब मिलकर तालाब को साफ़ रखेंगे” सब एक साथ बोले।

जिश्नू और उसके दोस्त काम पर लग गए। और दूर, बहुत दूर भगवान मुस्करा रहे थे। उनका काम जो हो गया था!

थोड़ी जानकारी, थोड़ा मज़ा!

जबसे मेरा तालाब साफ़ हुआ है, यहाँ दूर-दूर से कई प्रकार के सुंदर पक्षी आने लगे हैं। कुछ रहते हैं पानी में, तो कुछ घने पेड़ों पर। मैंने दिए हैं इनके नाम। अब तुम बताओ मेरी बेटी चम्पा ने किन-किन पक्षियों को देखा होगा? फिर सही चित्र पर ☑ का निशान और ग़लत चित्र पर ☒ का निशान लगाओ।

पक्षी जो आकाश में ऊँचा उड़ते हैं।

चेड़ पक्षी ☐

चील ☐

पक्षी जो पानी में रहते हैं।

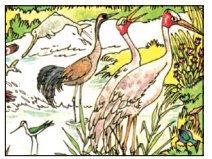

बगुला ☐

नीलकंठ ☐

मैगपाई ☐

लाल मुनिया ☐

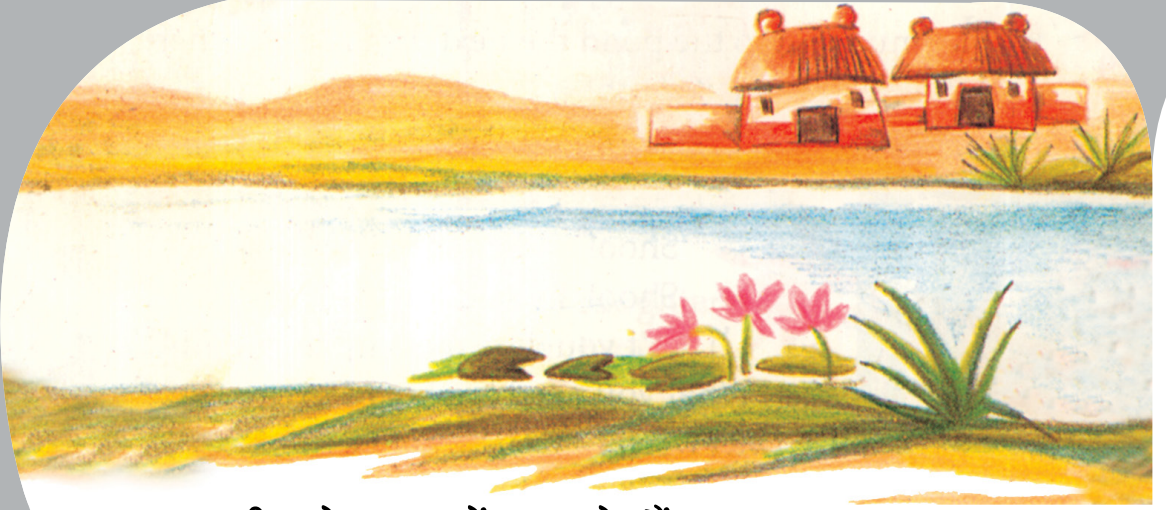

पक्षी जो रात में जागते हैं।

भारतीय पित्ता ☐

उल्लू ☐

तीतर ☐

पक्षी जो उड़ नहीं सकते।

मोर ☐

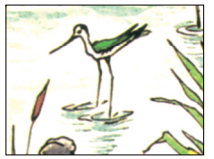

पनलवा ☐

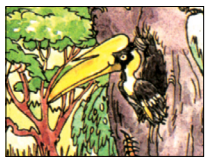

हॉर्नबिल ☐

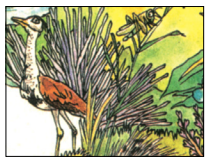

सोहन चिड़िया ☐

चित्राँकनः अतनु रॉय,
जय एवं सुजाता सिंह

ये शब्द अब हैं दोस्त हमारे

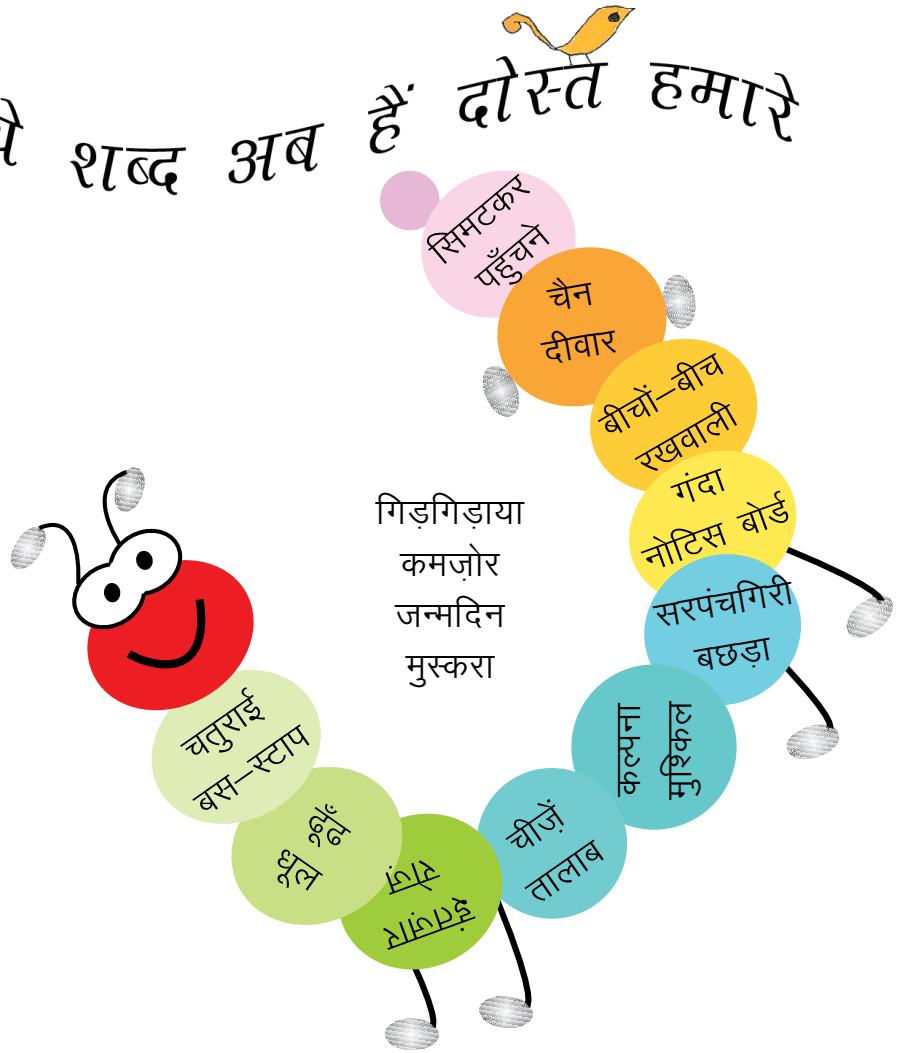

ehuk{kh Hkkj}kt को बच्चों के लिए लिखना बेहद अच्छा लगता है। रात की आवाज़ें उन्हें बड़ी रोमाँचक लगती हैं और उनकी खिड़की के बाहर जब अलसाई सुबह आँखें खोलती है तो वे सपनों की दुनिया में खो जाती हैं। उनका कहना है कि आधी रात से लेकर सुबह चार बजे के समय में ही वे लिख सकती हैं।

l|tkrk flg एक वरिष्ठ कलाकार, डिज़ाइनर एवं षिक्षिका हैं। इन्होंने विंबलडन स्कूल ऑफ आर्ट एंड डिज़ाइन, लंदन, से ग्राफ़िक डिज़ाइन और इलस्ट्रेशन में तीन साल का डिप्लोमा प्राप्त किया है और टारगेट, इंडिया टुडे, कथा, पेंगुइन बुक्स इत्या दि पत्रिकाओं और प्रकाषन केन्द्रों के साथ डिज़ाइनर एवं चित्रकार के रूप में काम किया है।

सीरीज संपादिकाः गीता धर्मराजन

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है।
इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों के एक स्कूल, कथाशाला को दिया जाएगा।

मेरी अगली कहानी

अगड़म, बगड़म, तिगड़म हम
झट-पट सीखें अक्षर हम।
200 दोस्त बनें कम से कम
तिगड़म अगड़म बगड़म हम!

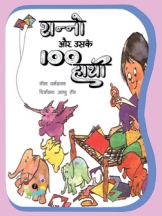

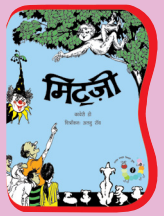

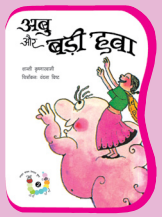

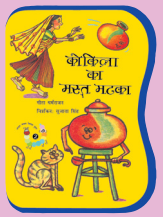

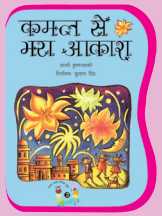

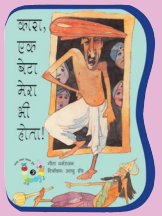

KATHA

यह कहानी "तमाशा" में सन् 1991 में प्रकाशित हो चुकी है
दूसरा संस्करण 2007, तीसरा संस्करण 2009, चौथा संस्करण 2010, पाँचवाँ संस्करण 2010, छठवाँ संस्करण 2013

कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

एजियन ऑफ्सेट, नोएडा (उत्तर प्रदेश) द्वारा मुद्रित
ISBN 978-81-89020-96-5
संपादकीय टीमः वैशाली माथुर, युक्ति बैनर्जी

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलने वाली खुशी को बढ़ावा देना। कथा स्कूल दिल्ली के बस्ती, मोहल्लों और अरुणाचल प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में स्थित है।

ए 3 सर्वोदय एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग
नई दिल्ली–110017
दूरभाषः 4141 6600, 4182 9998, फैक्सः 2651 4373
ई मेलः ilr@katha.org, इंटरनेटः http://www.katha.org

प्रोडक्शन टीमः प्रकाश आचार्य, यशपाल बिष्ट, विक्रम कुमार

जैसे बूँद-बूँद से गहरे सागर, रेत के
कणों से फैले हुए रेगिस्तान बनते हैं,
वैसे ही नन्हे बच्चों की सूझ-बूझ से बनती हैं
मनोरंजक कहानियाँ। चलो ले चलते हैं तुम्हें
अबु, नूतन, कोकिला, जिश्नू ... से मिलाने।
क्या है इनमें कोई तुम्हारे जैसा ...?

a katha book for young learners
ISBN 978-81-89020-96-5
www.katha.org
Rs 48